RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 2, Year : 4
Jul.-Aug.-Sep. (2017), Pages : 122 - 126
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

कुमाऊँ की कत्यूरकालीन वैष्णव प्रतिमाएं

कैलाश सिंह
टी.जी.टी. कला,
केन्द्रिय विद्यालय, दिमापुर,
नागालैण्ड

Received : 14/06/2017 *1st BPR* : 15/06/2017 *2nd BPR* : 18/06/2017 *Accepted* : 20/06/2017

ABSTRACT

कत्यूरी शासकों ने अपने शासन काल के मध्य सैकड़ों देवालयों व नौलों (जलाशय) का निर्माण करवाया। उनके द्वारा निर्मित देवालय व उनमें उत्कीर्ण मूर्तिशिल्प आज भी उनकी शिल्पकला के जीवन्त प्रमाण हैं। कत्यूरी काल में शिल्पकला की विशेष उन्नति हुई, जिस कारण शिल्पकला की दृष्टि से यह काल उत्तराखण्ड राज्य का 'स्वर्णिम काल' कहा जाता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कुमाऊँ मण्डल में कत्यूर काल के समय रूपायित की गई प्रतिमाएं भारतीय प्रतिमा लक्षणों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इनको शास्त्रों व पुराणों में निर्दिष्ट लक्षणों के आधार पर गढ़ा गया है। इस दृष्टि से यहाँ की मूर्तिकला भी भारतीय कला इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से कई ऐसी उत्कृष्ट प्रतिमाएं कत्यूर काल में गढ़ी गई हैं, जो भारतीय मध्यकालीन कला का प्रतिनिधित्व करती हैं। कत्यूरकालीन मूर्तिकला में गुप्त काल का सर्वाधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

कत्यूरी राजवंश उत्तराखण्ड राज्य का प्रमुख ऐतिहासिक राजवंश था जिसका अभ्यूदय सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ। जिसने केन्द्रीय शक्ति के रूप में ग्यारहवीं सदी तक शासन किया। तत्पश्चात् उन्हीं की विभिन्न शाखाओं ने लगभग 1550 ई0 तक अलग–अलग क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से शासन किया। कत्यूरी शासकों ने अपने शासन काल के मध्य सैकड़ों देवालयों व नौलों (जलाशय) का निर्माण करवाया। उनके द्वारा निर्मित देवालय व उनमें उत्कीर्ण मूर्तिशिल्प आज भी उनकी शिल्पकला के जीवन्त प्रमाण हैं। कत्यूरी काल में शिल्पकला की विशेष उन्नति हुई, जिस कारण शिल्पकला की दृष्टि से यह काल उत्तराखण्ड राज्य का 'स्वर्णिम काल' कहा जाता है। कत्यूरकाल के समय हिन्दू धर्म की वृहद् विषय–वस्तु को शिल्पियों द्वारा प्रतिमांकित किया गया। कत्यूरकालीन मूर्तिकला का प्रधान विषय ब्राह्मण देवमण्डल रहा है। वे मुख्य रूप से ब्राह्मण धर्म के शैव उपासक थे। यही कारण है कि उनके द्वारा निर्मित देवालयों में शैव मन्दिरों की अधिकता है। लेकिन कुछ कत्यूरी शासकों ने परम वैष्णव (परम विष्णु भक्त) विरूद भी धारण किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे वैष्णव सम्प्रदाय के प्रति भी श्रद्धावान व समर्पित थे। उनके द्वारा निर्मित वैष्णव मन्दिरों से भी यह बात पुष्ट होती है। उनके शासन काल में वैष्णव सम्प्रदाय की प्रतिमाओं को भी प्रमुखता के साथ रूपायित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में वैष्णव प्रतिमाएं प्रचुर संख्या में मिलती हैं। यद्यपि वैष्णव प्रतिमाओं का अंकन सामान्यतः सभी मन्दिरों में पार्श्व देवता के रूप में मिलता है, तथापि अध्ययन क्षेत्र में कई ऐसे प्रधान देवालय भी हैं, जो मुख्यतः भगवान विष्णु को समर्पित हैं तथा उन देवालयों में अधिनायाक के रूप में भगवान विष्णु की प्रतिमा को प्रतिष्ठापित किया गया था। बद्रीनाथ मन्दिर–गढ़सेर, बद्रीनाथ मन्दिर (द्वाराहाट), बद्रीनाथ मन्दिर (कुँवाली), लक्ष्मीनारायण व सत्यनारायण मन्दिर (तल्लीहाट–बैजनाथ) मुख्य रूप से भगवान विष्णु को समर्पित हैं।

अध्ययन क्षेत्र में विष्णु की बहुसंख्य प्रतिमाएं उपलब्ध हैं, जिन्हें निम्नलिखित वर्गों में बांटा जा सकता है–

– स्थानक विष्णु प्रतिमाएं
– शयन विष्णु प्रतिमाएं
– बैकुण्ठ विष्णु प्रतिमा
– विश्वरूप विष्णु प्रतिमा
– लक्ष्मी–नारायण प्रतिमाएं
– अवतार प्रतिमाएं

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 122-126 , ISSN 2348 – 3318
कैलाश सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

स्थानक विष्णु प्रतिमाएं

अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त विष्णु प्रतिमाओं में सर्वाधिक प्रतिमाएं स्थानक मुद्रा में हैं। कुंवाली, तैलीहाट, गढ़सेर, नारायणकाली, कासनी आदि स्थलों से विष्णु की परिकर युक्त अत्यधिक अलंकृत व भव्य प्रतिमाएं प्रकाश में आई हैं। अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त अधिकांश स्थानक विष्णु प्रतिमाएं चतुर्भुजी हैं। अधिकांशतः इन्हें पद्मपीठ या साधारण पीठ पर सम्पाद मुद्रा में खड़े दिखाया गया है। चतुर्भुजी विष्णु के हाथों में चक्र, गदा, पद्म, शंख आदि का निरूपण किया गया है। विष्णु के अग्र हस्त को वरद मुद्रा में भी निरूपित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त विष्णु प्रतिमाएं अत्यधिक अलंकृत हैं। उन्हें अलंकृत मुकुट, कर्ण कुण्डल, कण्ठहार, माला, उदरबन्ध, कटिसूत्र, केयूर, कंकण, पायल आदि से सज्जित किया गया है। विष्णु को घुटने तक की अलंकृत धोती पहने प्रदर्शित किया गया है। कई प्रतिमाओं में कटिसूत्र व वक्ष स्थल के मध्य एक अतिरिक्त बन्ध भी निरूपित किया गया है। अधिकांश प्रतिमाओं में वक्ष स्थल पर श्री वत्स चिह्न तथा वरद् मुद्रा हस्त की हथेली पर मांगलिक चिह्न अंकित किया गया है। विष्णु आयुधों को भी ज्यामितिय रूपाकारों द्वारा अलंकृत किया गया है। कतिपय प्रतिमाओं में विष्णु प्रतिमा के अधो पार्श्व में सहायक व अनुचरों के रूप में करबद्ध उपासक, गदा देवी, चक्र पुरूष, पद्म पुरूष, शंख पुरूष आदि का निरूपण है तथा उर्ध्व पार्श्व में मालाधरों का अंकन किया गया है। विष्णु के पाद पार्श्व में वाहन गरूड़ को भी मानव रूप में अंकित किया गया है। किंचित विष्णु प्रतिमाओं के ऊपरी पार्श्व में आसनस्थ ब्रह्मा व शिव का अंकन भी किया गया है।

कासनी, तैलीहाट, गढ़सेर, कुवाली की विष्णु प्रतिमाएं भव्य कलात्मक परिकरों से युक्त है। अन्य प्रतिमाओं की अपेक्षा बड़े आकार की ये प्रतिमाएं अपनी कलात्मकता व भव्यता के कारण विशेष उल्लेखनीय हैं। इन प्रतिमाओं के परिकर में विष्णु के दशावतारों, नवग्रहों, व्याल आकृतियों, ध्यानस्थ विष्णु, उपासक उपासिकाओं आदि का अंकन किया गया है।

शयन विष्णु प्रतिमाएं

अध्ययन क्षेत्र में विष्णु की शयन प्रतिमाएं प्रचुरता से मिलती हैं। इन प्रतिमाओं में भगवान विष्णु को आदि शेष पर शयन करते दिखाया गया है। विष्णुपुराण के अनुसार विष्णु का जल में ही प्रथम निवास होने के कारण उन्हें नारायण कहा जाता है। अतः सम्भवतः नौलों में अधिकांशतः भगवान विष्णु की शयन विष्णु प्रतिमाओं को प्रतिष्ठापित किया। अध्ययन क्षेत्र में विष्णु की शयन प्रतिमाओं के उत्कृष्ट उदाहरण बैजनाथ, कटारमल, कोटभ्रामरी, द्वाराहाट, गढ़सेर आदि स्थलों से प्रकाश में आए हैं। भगवान विष्णु की शयन प्रतिमाओं में उन्हें शेष शय्या पर शयन करते हुए निरूपित किया गया है। शेषनाग के सप्तफण विष्णु के मस्तक पर छाया किए हुए हैं। इन मूर्तियों में विष्णु को चतुर्भुजी प्रदर्शित किया गया है। सामान्यतः उनका एक हस्त शीर्ष को सहारा देते हुए प्रदर्शित किया गया है, तथा अन्य हस्त परम्परागत आयुधों गदा, चक्र, शंख, पद्म आदि से शोभित हैं। शयन मुद्रा में लेटे हुए विष्णु का एक पैर मुड़ी हुई अवस्था में शैय्या पर अवस्थित है, जबकि दूसरा पैर लक्ष्मी जी की गोद में है, जो कि विष्णु के पैर के पास पाद संवाहन मुद्रा में बैठी हैं। विष्णु की नाभि से निकले कमल पर ब्रह्मा को विराजमान प्रदर्शित किया गया है। कतिपय प्रतिमाओं में ब्रह्मा के पार्श्व में आयुध धारण किए दो पुरूष आकृतियां निरूपित की गई हैं। जो सम्भवतः मधु व कैटव नामक दैत्य हैं। इसके अतिरिक्त विष्णु की शयन प्रतिमाओं के पार्श्व में मालाधारी, चवरधारिणी सेविकाओं, उपासक–उपासिकाओं आदि का अंकन किया गया है। कतिपय प्रतिमाओं में नवग्रहों का अंकन भी प्रतिमा के ऊपरी पार्श्व में किया गया है। शयन करते हुए विश्णु की शेष–शैय्या के नीचे मत्स्य, मकरमुख, निधिपात्र, अमृतकलश आदि का अंकन किया गया है, जो जलीय जीवन को निरूपित करते हैं।

इन प्रतिमाओं में विष्णु को मुकुट, कर्ण कुण्डल, एकावली, कण्ठहार, केयूर, कंकण, वनमाला यज्ञोपवित, कटिसूत्र आदि आभुषणों से सुसज्जित किया गया है। कतिपय प्रतिमाओं में अंजलिहस्त मानवरूपी गरूड़ का अंकन भी किया गया है।

बैकुण्ठ विष्णु प्रतिमा–

विष्णु के चार रूपों वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न व अनिरूद्ध की संयुक्त रूप से प्रदर्शित मूर्ति को बैकुण्ठ नाम से जाना जाता है। अध्ययन क्षेत्र से प्रकाश में आई बैकुण्ठ विष्णु प्रतिमा गणनाथ मन्दिर (ताकुला–अल्मोड़ा) में अवस्थित है। यह प्रतिमा मूल रूप से लक्ष्मी–नारायण मन्दिर, बैजनाथ (कत्यूर, अल्मोड़ा) में प्रतिष्ठापित थी, जिसे कुमाऊँ कमिश्नर ट्रेल द्वारा यहां प्रतिस्थापित किया गया। इस प्रतिमा का विवरण पन्त द्वारा प्रस्तुत किया गया है। उनके विवरणानुसार गणनाथ मन्दिर, ताकुला (अल्मोड़ा) में अवस्थित बैकुण्ठ विष्णु की यह प्रतिमा चतुर्भुजी प्रदर्शित की गई है, जो स्थानक मुद्रा में खड़ी है। विष्णु के दक्षिण उर्ध्व व अधो हस्त में क्रमशः प्रफुल्ल पद्म व गदा का निरूपण किया गया है। प्रतिमा का बाम अधो हस्त चक्र युक्त है तथा बाम उर्ध्व हस्त खण्डित है। चतुर्भुजी बैकुण्ठ विष्णु का सामने का प्रधान मुख सौम्य पुरूष का है तथा दक्षिण व बाम मुख क्रमशः नरसिंह व वराह का है। प्रतिमा का पृष्ठ मुख सामने के मुख के समान ही है। प्रतिमा में विष्णु को किरीट मुकुट, कुण्डल, कण्ठहार, वनमाला, उदरबन्ध, केयूर, कंकण, पैरों के कड़े, नूपुर, यज्ञोपवित तथा अलंकृत धोती द्वारा सुसज्जित किया गया है।

प्रतिमा के ऊपरी पार्श्व में दाईं व बाईं ओर क्रमशः ललितासन में चतुर्भुजी ब्रह्मा व शिव का अंकन किया गया है तथा उनके नीचे दोनों ओर एक एक मालाधारी विद्याधर प्रदर्शित हैं। विष्णु के बायीं ओर अधो पार्श्व में त्रिभंग मुद्रा में पद्म धारण किए

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 122-126 , ISSN 2348 – 3318
कैलाश सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पद्मपुरूष व पद्मपुरूष के पीछे सम्भवतः लक्ष्मी का अंकन है तथा विष्णु के दायीं ओर अधो पार्श्व में त्रिभंग मुद्रा में शंख धारण किए शंख पुरूष व शंख पुरूष के पार्श्व में मानवरूपी गरूड़ का अंकन किया गया है। प्रतिमा में विष्णु के स्कन्ध के पार्श्व में भी दोनों ओर एक–एक अंजलिहस्त मुद्रा में बैठी पुरूष आकृतियां अंकित की गई हैं। उपरोक्त प्रतिमा के परिकर के दाएं खण्ड में सिंह–ब्याल, मालाधारी स्त्री, पशुमुख मानवाकृतियां, मत्स्यावतार व नृसिंह अवतार का अंकन किया गया है। प्रतिमा के परिकर का बाम खण्ड उपलब्द्ध नहीं है।

विश्वरूप विष्णु प्रतिमा–

कुमाऊँ मण्डल में कत्यूर काल के समय विश्वरूप विष्णु प्रतिमा कम ही उकेरी गई। विष्णु की एक विश्वरूप प्रतिमा बैजनाथ मूर्ति कक्ष में संग्रहित की गई है। पन्त के विवरणानुसार ये प्रतिमा अष्टभुजी है, जिसे आदि एवं शेष की कुण्डलियों के ऊपर खड़ी नारी आकृति (पृथ्वी) के ऊपर उठे दोनों हाथों के ऊपर द्विभंग मुद्रा में खड़ा प्रदर्शित किया गया है। विष्णु के दक्षिण दो हस्तों में खड्ग व गदा है तथा शेष दो हस्त अभय मुद्रा व तरकश से तीर निकालते प्रदर्शित हैं। विष्णु के बाम हस्तों में ढाल, चक्र, धनुश व शंख का निरूपण किया गया है। अष्टभुजी विष्णु को पंचमुखी प्रदर्शित किया गया है। प्रतिमा में केन्द्रिय प्रधान मुख पुरूष मुख है तथा शेष चार मुख चार अलग–अलग अवतारों के मुख हैं, जिनमें दाईं ओर ऊपरी व निचला मुख क्रमशः सिंह व कूर्म का है तथा प्रतिमा के बाईं ओर ऊपरी व निचला मुख क्रमशः वराह व मत्स्य का बनाया गया है। प्रतिमा के अधोबाम पार्श्व में अंजलिहस्त मुद्रा में वाहन गरूड़ का निरूपण है तथा दक्षिण पार्श्व में चॅवर एवं पुष्प धारण किए लक्ष्मी का अंकन है। इसके अतिरिक्त प्रतिमा के पार्श्व में अश्वमुख धारी हयग्रीव, ब्रह्मा, एकादश रूद्र, द्वादश आदित्य, अष्टभैरव आदि का अंकन किया गया है। प्रतिमा में विष्णु को किरीट मुकुट, हार, एकावली, यज्ञोपवित, कंकण वनमाला, मेखला, धोती से अलंकृत किया गया है।

लक्ष्मी–नारायण प्रतिमाएं

'प्रकृति' और 'पुरूष' के संयोगात्मक रूप में लक्ष्मी–नारायण की परिकल्पना पौराणिक युग में की गई थी। अध्ययन क्षेत्र में लक्ष्मी–नारायण की कई प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। इन प्रतिमाओं में भगवान विष्णु को अपनी अर्द्धांगिनी लक्ष्मी के साथ निरूपित किया गया है। ये लक्ष्मी–नारायण प्रतिमाएं स्थानक व आसनस्थ दोनों मुद्राओं में प्राप्त होती हैं। लक्ष्मी–नारायण प्रतिमाओं में विष्णु को चतुर्भुजी व लक्ष्मी को द्विभुजी प्रदर्शित किया गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में निर्देश है कि विष्णु या हरि के साथ लक्ष्मी को दो भुजाओं वाली तथा पृथक रूप में चतुर्भुजी बनाया जाना चाहिए। लक्ष्मी का दक्षिण हस्त विष्णु के दाएं स्कन्ध पर अवस्थित है तथा बाम हस्त में पुष्प गुच्छ प्रदर्शित किया गया है। चतुर्भुजी विष्णु के तीन हाथों में पारम्परिक आयुधों शंख, चक्र, पद्म व गदा का अंकन है तथा चौथा बाम हस्त लक्ष्मी के पीछे से आलिंगन मुद्रा में उनके बाम स्तन को स्पर्श करता हुआ निरूपित किया गया है। विष्णु को किरीट मुकुट, कर्ण कुण्डल, कण्ठहार, माला, केयूर, कंकण, यज्ञोपवित कटिसूत्र, मेखला, वनमाला व अलंकृत धोती से सुसज्जित किया गया है। भगवान विष्णु के वक्ष स्थल पर श्री वत्स चिह्न भी अंकित किया गया है। लक्ष्मी को भी मुकुट, कण्ठहार, एकावली, नाभिछन्दक, उदरबन्ध, अलंकृत धोती, पायल, केयूर, कंकण आदि आभूशणों से अलंकृत किया गया है।

आसनस्थ लक्ष्मी–नारायण प्रतिमा में विष्णु व लक्ष्मी को वाहन गरूड़ के ऊपर प्रदर्शित किया गया है। इसमें विष्णु ललितासन मुद्रा में विराजमान हैं तथा उनकी बाम जंघा पर लक्ष्मी को विराजमान प्रदर्शित किया गया है। उनके नीचे द्विभुजी मानवरूपी गरूड़ का अंकन है, जिसके दोनों हाथ लक्ष्मी–नारायण को उठाए हुए दिखाए गए हैं। मानवरूपी गरूड़ को कुण्डल, मोती माला, केयूर, कंकण व स्कन्ध के निकले हुए पंखों द्वारा अलंकृत किया गया है। गरूड़ के मुखमण्डल पर स्वामिभक्ति का भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अध्ययन क्षेत्र में आसनस्थ लक्ष्मी–नारायण प्रतिमा के उत्कृष्ट उदाहरण जागेश्वर से प्राप्त होते हैं, जो पुरातात्विक संग्रहालय, जागेश्वर में प्रदर्शित हैं। कटारमल से भी आसनस्थ लक्ष्मी नारायण की भग्न प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। भग्न होने के बाद भी अवशिष्ट प्रतिमा से उसकी उत्कृष्टता का अनुमान लगाया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में स्थानक लक्ष्मी–नारायण प्रतिमाएं आसनस्थ लक्ष्मी–नारायण प्रतिमाओं की अपेक्षा कम हैं। कटारमल से तीन स्थानक लक्ष्मी–नारायण की भग्न प्रतिमाएं प्रकाश में आई हैं, जो मुख्य मन्दिर के गर्भगृह में रखी हैं। उक्त प्रतिमाओं में लक्ष्मी व नारायण को त्रिभंग मुद्रा में पद्मपीठ या साधारण पीठ पर खड़ा प्रदर्शित किया गया है। इन प्रतिमाओं में विष्णु को चतुर्भुजी व लक्ष्मी को द्विभुजी निरूपित किया गया है। लक्ष्मी का दक्षिण हस्त विष्णु के दक्षिण स्कन्ध पर अवस्थित है तथा विष्णु का अधो बाम हस्त लक्ष्मी की कटि या कटि के ऊपर वाम स्तन को स्पर्श करता हुआ प्रदर्शित किया गया है। उक्त तीनों प्रतिमाएं आंशिक रूप से खण्डित हैं, किन्तु इनका संयुक्त रूप से अध्ययन करने पर यह प्रतीत होता है कि इन प्रतिमाओं में विष्णु ने अपने पारम्परिक आयुधों (शंख, चक्र, पद्म, गदा) को धारण किया होगा। विष्णु को किरीट मुकुट, कर्ण कुण्डल, कण्ठहार, तीन लडियों का हार, कंकण, उदरबन्ध, यज्ञोपवित, जंघाओं तक अलंकृत धोती, वनमाला, पाद कुण्डल तथा लक्ष्मी को मुकुट, कर्ण कुण्डल, कण्ठहार, एकावली, नाभिछन्दक, केयूर, कंकण, वनमाला, कमर से लटकती लड़ियों, धोती, नूपुर आदि से अलंकृत किया गया है। प्रतिमाओं को देखकर प्रतीत होता है कि इनके पार्श्व में चक्र पुरूष, शंख पुरूष, गदा देवी, व अंजलिहस्त मुद्रा में उपासक उपासिकाओं का अंकन भी

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 122-126 , ISSN 2348 – 3318
कैलाश सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

किया गया है। परम्परा के अनुसार सम्भवतः बाईं ओर शिव का अंकन किया गया है, किन्तु खण्डित होने के कारण यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

अवतार प्रतिमाएं

विष्णु के अवतारों का निरूपण कुशाण काल से पूर्व नहीं मिलता है। कुशाण काल में वराह, कृष्ण और बलराम की मूर्तियां बननी प्रारम्भ हुई। अवतार वाद की इस धारणा का गुप्त काल में और अधिक विकास हुआ। अलग–अलग पुराणादि में अवतारों की संख्या भिन्न–भिन्न दी हुई है, किन्तु मुख्यतः विष्णु के सर्वमान्य दशावतारों को ही कला में अभिव्यक्त किया गया है। ये अवतार हैं–

1. मत्स्य 2. कूर्म 3. वराह 4. नरसिंह 5. वामन
6. परशुराम 7. राम 8. कृश्ण 9. बुद्ध 10. कलकी

अध्ययन क्षेत्र में विष्णु के इन अवतारों का अंकन दो रूपों में देखने को मिलता है। एक सामूहिक रूप में तथा दूसरा स्वतन्त्र रूप्में।

सामूहिक अंकन –

अवतारों के सामूहिक अंकन को भी दो रूपों में व्यक्त किया गया है। पहला दशावतार पट्ट के रूप में दूसरा विष्णु प्रतिमाओं के परिकर में।

दशावतार पट्ट में क्रमशः मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि अवतारों का अंकन किया गया है। दशावतार पट्ट के उदाहरण द्वाराहाट, गढ़सेर व बागेश्वर से प्राप्त होते हैं। गढ़सेर से प्राप्त दशावतार पट्ट वर्तमान में राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा में प्रदर्शित है। बहुत कम उभार युक्त इस पट्ट पर महीन कार्य नहीं किया गया है। इसमें प्रदर्शित मत्स्य, नृवराह, नृसिंह व बुद्ध को चतुर्भुजी तथा परशुराम, राम व बलराम को द्विभुजी निरूपित किया गया है। इस पट्ट पर मत्स्यावतार का अधोभाग मत्स्य व ऊपरी भाग नर रूप में प्रदर्शित है। कूर्म अवतार का अंकन विग्रह रूप में ही है। इसके ऊपर मन्थन का दृश्य अंकित है। वराह अवतार नृ–वराह रूप में अंकित है। उसका अधोभाग नर व उर्ध्व भाग वराह का है। नृसिंह अवतार में पद्मपीठ पर आसीन नृसिंह अपनी गोद में हिरणाकश्यप को लिटा कर उसका वक्ष स्थल अपने हाथों से चीरता हुआ निरूपित किया गया है। तत्पश्चात वामन अवतार का अंकन है। उसके बाद परशुराम, तत्पश्चात राम का अंकन है, जो रावण पर धनुष से तीर छोड़ते हुए दर्शाए गए हैं। युद्ध में राम का सहयोग करते अन्य धनुर्धर (सम्भवतः लक्ष्मण) व पत्थर उठाकर फेंकते बन्दर का अंकन भी किया गया है। राम के बाद बलराम को हल के साथ प्रदर्शित किया गया है। उसके बाद पद्मपीठ पर पद्मासन में बैठे बुद्ध व अन्त में कल्कि अवतार का अंकन किया गया है।

सभी आकृतियों के मुकुट की संरचना एक समान है। वस्त्र आभूषण भी समान ही हैं। वस्त्राभूषण तथा कला अंकन की दृष्टि से इसमें स्थानीय कला की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है। शैली के आधार पर इसका काल 15वीं शती निर्धारित किया गया है।

9वीं शती ई0 का एक खण्डित दशावतार पट्ट बागनाथ मन्दिर संग्रहालय में प्रदर्शित है। इसमें पांच अवतारों का अंकन है। इस पट्ट पर अवतारों का अंकन शास्त्रीय लक्षणों के आधार पर किया गया है। पारम्परिक आयुधों से युक्त इन अवतारों को आभूषणों से सुसज्जित किया गया है। बागनाथ संग्रहालय में ही एक अन्य दशावतार पट्ट है पर अत्यधिक खण्डित होने के कारण अस्पष्ट है।

अध्ययन क्षेत्र में दशावतार पट्टों का अंकन बहुत कम संख्या में मिलता है। दशावतारों का अंकन विष्णु मूर्ति के परिकर में भी किया गया है। कुंवाली, गढ़सेर, कासानी, द्वाराहाट के विष्णु प्रतिमा परिकर में कतिपय विष्णु अवतारों का अंकन किया गया है।

स्वतन्त्र अंकन

अध्ययन क्षेत्र में विष्णु के दशावतारों में से केवल वराह अवतार व नृसिंह अवतार की ही स्वतन्त्र प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं। उनकी संख्या भी कम ही है।

नृवराह – अध्ययन क्षेत्र में विष्णु के वराह अवतार का अंकन नृवराह के रूप में ही हुआ है। इसमें अधोभाग नर का व उर्ध्वभाग वराह का है। नृवराह की स्वतन्त्र प्रतिमा कुंवाली के बद्रीनाथ मन्दिर व गढ़सेर के बद्रीनाथ मन्दिर (वर्तमान में राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा में प्रदर्शित) से प्रकाश में आई है।

कुंवाली से प्राप्त नृवराह की प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है। यह प्रतिमा चतुर्भुजी है। नृवराह का अगला दक्षिण हस्त कटिहस्त मुद्रा में व पिछला दक्षिण हस्त चक्र धारण किए हुए है। पिछला बाम हस्त शंख धारण किए हुए है तथा अगला बाम हस्त कुहनी से मुड़ा हुआ प्रदर्शित है जिस पर वह पृथ्वी देवी को उठाए हुए है। नृवराह ने बांया पैर नागफण पर रखा हुआ है। नृवराह के ऊपर पद्म छत्र शोभित है। कोहनी पर बैठी पृथ्वी देवी अन्जलि मुद्रा में पद्मासन विराजमान है। प्रतिमा के नीचे बाएं पार्श्व में करबद्ध उपासक प्रदर्शित किया गया है। नृवराह को कण्ठहार, कंकण, जंघा तक धोती, पैरों में कड़े व वनमाला से विभूषित किया गया है। नृवराह के वक्ष स्थल पर श्रीवत्स चिह्न भी अंकित है। शारीरिक गठन व सन्तुलन से नृवराह के शारीरिक बल व गति का आभास

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 122-126 , ISSN 2348 – 3318
कैलाश सिंह
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

होता है। यह मूर्ति अध्ययन क्षेत्र की नृवराह मूर्तियों में उत्कृष्ट उदाहरण है।

नृसिंह– अध्ययन क्षेत्र में नृसिंह अवतार की स्वतन्त्र मूर्तियों का अभाव है। नृसिंह की एक छोटी भग्न स्वतन्त्र प्रतिमा राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा में प्रदर्शित है। इसमें नृसिंह को हिरणाकश्यप का उदरभेदन करते हुए प्रदर्शित किया गया है। नृसिंह को कण्ठहार, यज्ञोपवित, वनमाला व कंकण से सुसज्जित किया गया है तथा केशराशि पीछे की ओर लटकती हुई प्रदर्शित की गई है।

उक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कुमाऊँ मण्डल में कत्यूर काल के समय रूपायित की गई प्रतिमाएं भारतीय प्रतिमा लक्षणों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इनको शास्त्रों व पुराणों में निर्दिष्ट लक्षणों के आधार पर गढ़ा गया है। इस दृष्टि से यहाँ की मूर्तिकला भी भारतीय कला इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से कई ऐसी उत्कृष्ट प्रतिमाएं कत्यूर काल में गढ़ी गई हैं, जो भारतीय मध्यकालीन कला का प्रतिनिधित्व करती हैं। कत्यूरकालीन मूर्तिकला में गुप्त काल का सर्वाधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त प्रतिमाओं की साम्यता भारत के अन्य क्षेत्रों से प्राप्त उत्कृष्ट प्रतिमाओं से की जा सकती है।

संदर्भ

1. जोशी, महेश्वर प्रसाद, 1994, उत्तराँचल में सांस्कृतिक परिवर्तनः एक सैद्धान्तिक अध्ययन, ऋषि–1, उत्तरांचल हिमालय : समाज, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, पृ0सं0– 17
2. कठोच, यशवन्त सिंह, 2010, मध्यहिमालय खण्डः 3, उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास, बिनसर पब्लिसिंग कम्पनी,देहरादून, पृ0सं0–265
3. विष्णुपुराण 1. 4. 6, हिन्दी अनु0 मुनिलाल गुप्त, गीता प्रेस, गोरखपुर,
4. विष्णुधर्मोत्तर पुराण 85. 43–45, प्रियबाला शाह (सं0), बड़ौदा, 1958
5. Joshi, M.P., 1990, Uttaranchal Himalaya (Kumaon Garhwal) An Essay in Historical Anthropology, Shree Almora Book Depot, Almora, page 48
6. पन्त, गिरीश, 2007, सरयू घाटी का पुरातत्व (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), कु0 वि0 वि0 नैनीताल , पृ0सं0 167–168
7. वही, पूर्वोक्त, पृ0सं0 170–171
8. श्रीवास्तव, विमलमोहिनी, 2002, प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, पृ0सं0 12
9. विश्णुधर्मोत्तर पुराण, पूर्वोक्त, 3. 82, 2–3
10. तिवारी, मारूतिनन्दन एवं कमल गिरी, 1997, मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण, विश्वविद्यालय, प्रकाशन, चौक, वाराणसी, पृ0सं0 80–81
11. श्रीवास्तव, बृजभूषण, 2010, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, पृ0सं0 24
12. तिवारी, डी.एन., 2008, राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा की प्रस्तर प्रतिमाएं, अंकित प्रकाशन, चन्द्रावती कालोनी, पीलीकोठी, हल्द्वानी, पृ0सं0 107
13. हेमराज, 1988, कत्यूरघाटी का पुरातात्विक सर्वेक्षण, वर्ष (1984–85), जिला अल्मोड़ा, उ0प्र0 राज्य पुरातत्व संगठन, लखनऊ, पृ0सं0 5